नए स्कूल मास्टर

फीलिस नायलर

चित्र: मोमरू फुनाई

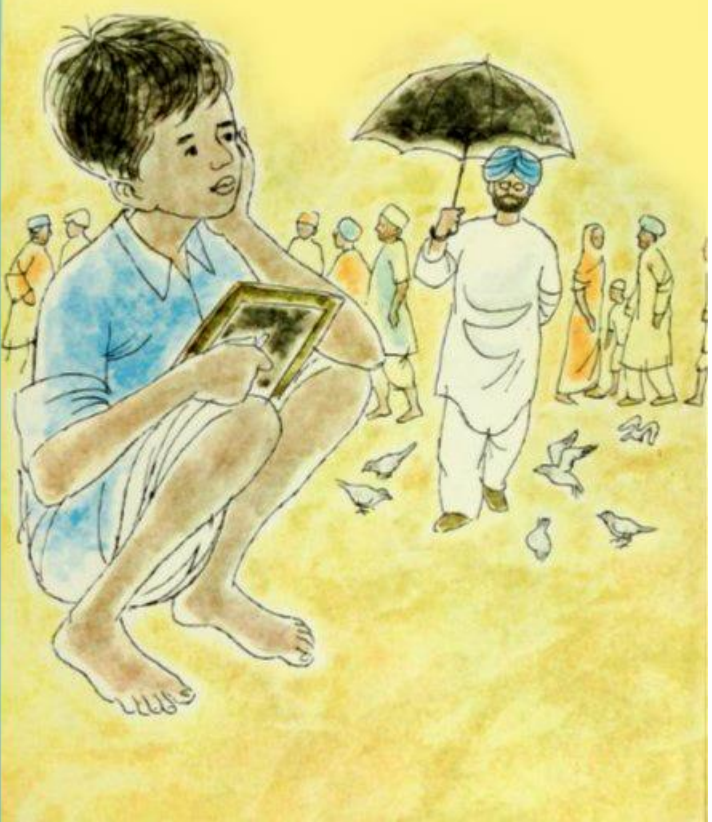

मास्टर कोस्त्रा मल्लिकपुर में अरुण के स्कूल में नए टीचर हैं. वह बंबई के एक अच्छे स्कूल से वहां आए हैं और उन्हें एक गाँव के छोटे स्कूल की आदत नहीं है, जहाँ छात्र ज़मीन पर बैठते हैं और स्लेट और चॉक का इस्तेमाल करते हैं.

मास्टर कोस्त्रा बच्चों को असभ्य और शरारती बुलाते हैं - पर बच्चों को ऐसा लगता है जैसे टीचर को स्कूल के बच्चे और गाँव पसंद नहीं है.

लेकिन जब अरुण नए स्कूल मास्टर को अपने घर में आमंत्रित करता है, तो एक आश्चर्यजनक घटना में सारी गलतफहमी दूर हो जाती है.

अरुण, उत्तर भारत में रहता है. वह और उसके दोस्त, कवि और साको, एक ऐसे स्कूल में जाते हैं जो खुले आसमान के नीचे चलता है. कभी-कभी छात्र सीखने के लिए सड़क पर भी बैठ जाते हैं. वहां के बच्चों के पास कागज-पेंसिल नहीं है. उसकी बजाए, वे अपने पाठ स्लेट पर चाक से लिखते हैं.

आज अरुण और उसके दोस्त खुश नहीं हैं.

अरुण कहता है, "वो वो भालू से भी बदतर है."

कवि कहता है, "वो बाघ से भी बदतर है."

"वो हाथी से भी गया-बीता है!" साको कहता है.

वो सुनकर पिताजी, चाक पर मिट्टी का बर्तन घुमाना बंद कर देते हैं और वे उन तीन लड़कों की ओर देखते हैं जो एक पेड़ के नीचे बैठे हैं.

"बताओ, अब पूरे भारत में संभवतः इतना बुरा व्यक्ति बहाल कौन हो सकता है?"

"मास्टर कोस्त्रा!" लड़के एकसाथ मिलकर चिल्लाते हैं. "वह इस गांव में अब तक आए सबसे खराब स्कूल मास्टर हैं!"

"क्या तुम्हारा टीचर लोगों को खाता है," बरामदे से मेली की डरपोक आवाज आई.

अरुण इतना परेशान था इसलिए वो अपनी छोटी बहन की बात पर हंसा नहीं. "नहीं, लेकिन टीचर सच में ऐसे बात करते हैं जैसे वो लोगों को खा जायेंगे. क्या आप जानते हैं कि टीचर ने आज दोपहर हमसे क्या कहा, पिताजी? उन्होंने हमसे कहा कि हम गधों की तरह अज्ञानी हैं..."

"और हम पवित्र गायों की तरह धीमे हैं," रवि ने कहा.

"और हम बंदरों की तरह शोर मचाते हैं," साको ने अपनी बात समाप्त की.

पिताजी की आँखें चमक उठीं. "मास्टर कोस्त्रा को यहां आए केवल एक सप्ताह ही हुआ है, पर लगता है कि वो तुम सबको जल्द ही बड़ी अच्छी तरह पहचान गए हैं."

"यह कोई मज़ाक की बात नहीं है, पिताजी," अरुण ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा. "ऐसे स्कूल मास्टर के साथ पूरे दिन भर गर्मी में बैठना कोई आसान काम नहीं है!"

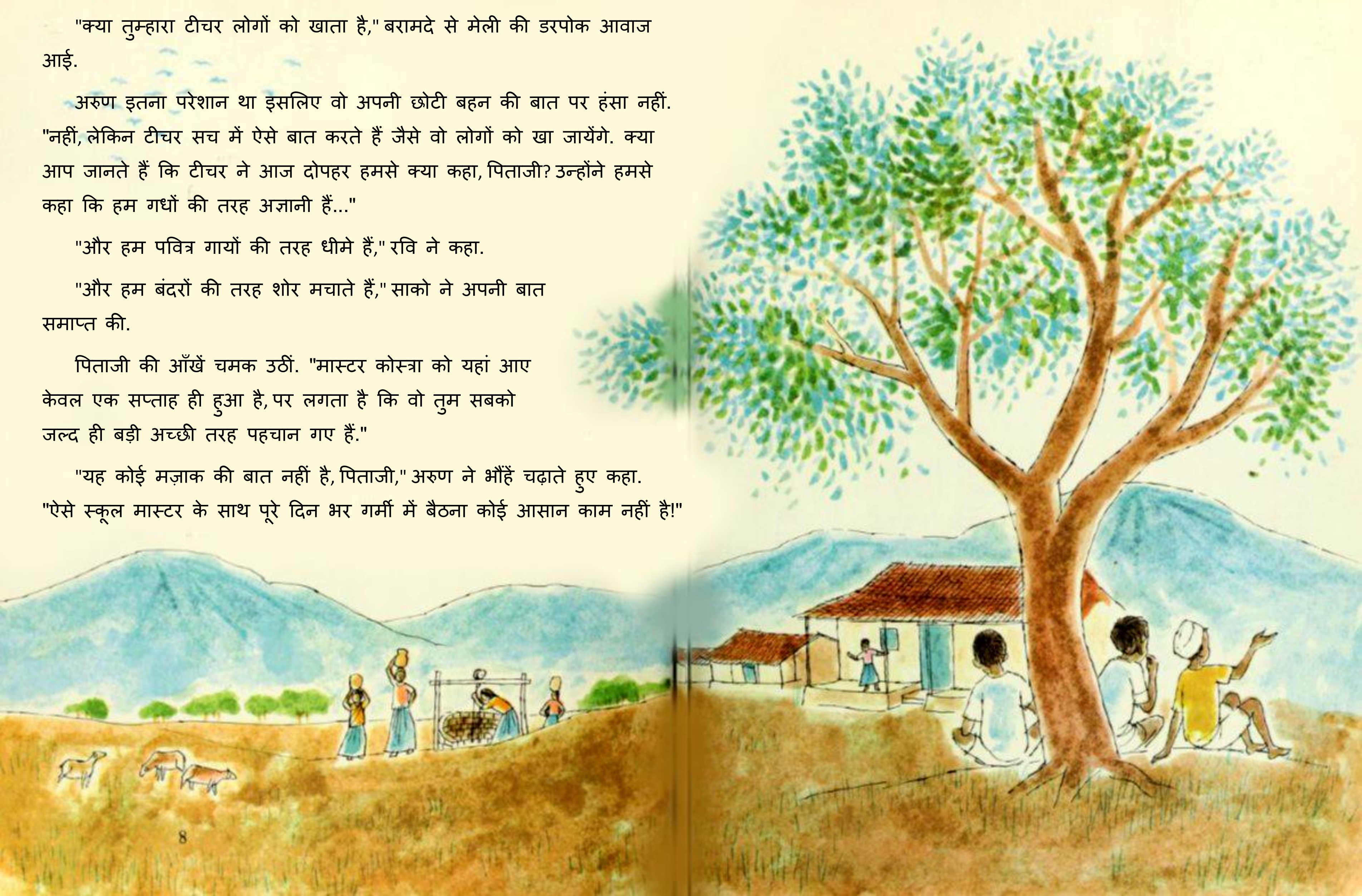

"मुझे यकीन है कि वो काम आसान नहीं होगा," पिताजी ने सहमति जताते हुए कहा. "और मास्टर कोस्त्रा के लिए भी हमारे जैसे गरीब गांव में पढ़ाना आसान नहीं होगा. वह बंबई के अच्छे स्कूलों के आदी हैं जहां के बच्चों के पास डेस्क, किताबें और पेंसिलें होती हैं. उनके लिए बाहर खुले में सड़कों और खेतों में पढ़ाना आसान नहीं होगा. लेकिन अगर हम चाहें तो मास्टर साहिब को मल्लिकपुर में घर जैसा महसूस करा सकते हैं. अरुण, तुम उन्हें रात के खाने के लिए घर पर क्यों नहीं बुलाते?"

अरुण ने सिर हिलाया. "वो कभी नहीं आएंगे."

तभी माँ ने बरामदे से आवाज लगाई. "क्या आप लोग त्यौहार के दिन भी स्कूल को नहीं भूल सकते हैं?"

अरुण और उसके दोस्त लगभग भूल ही गये थे! यह वसंत उत्सव में होली का समय था. यह वह समय था जब लोग नई फसल के काटने का जश्न मनाते थे. आज रात, शोर-शराबा होगा, बड़ा अलाव जलाया जाएगा और लोग गाने गाएंगे, लेकिन असली मज़ा कल आएगा.

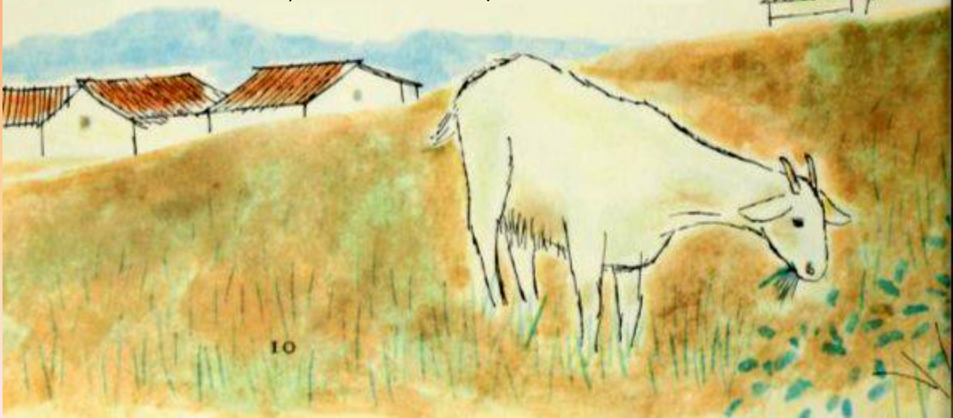

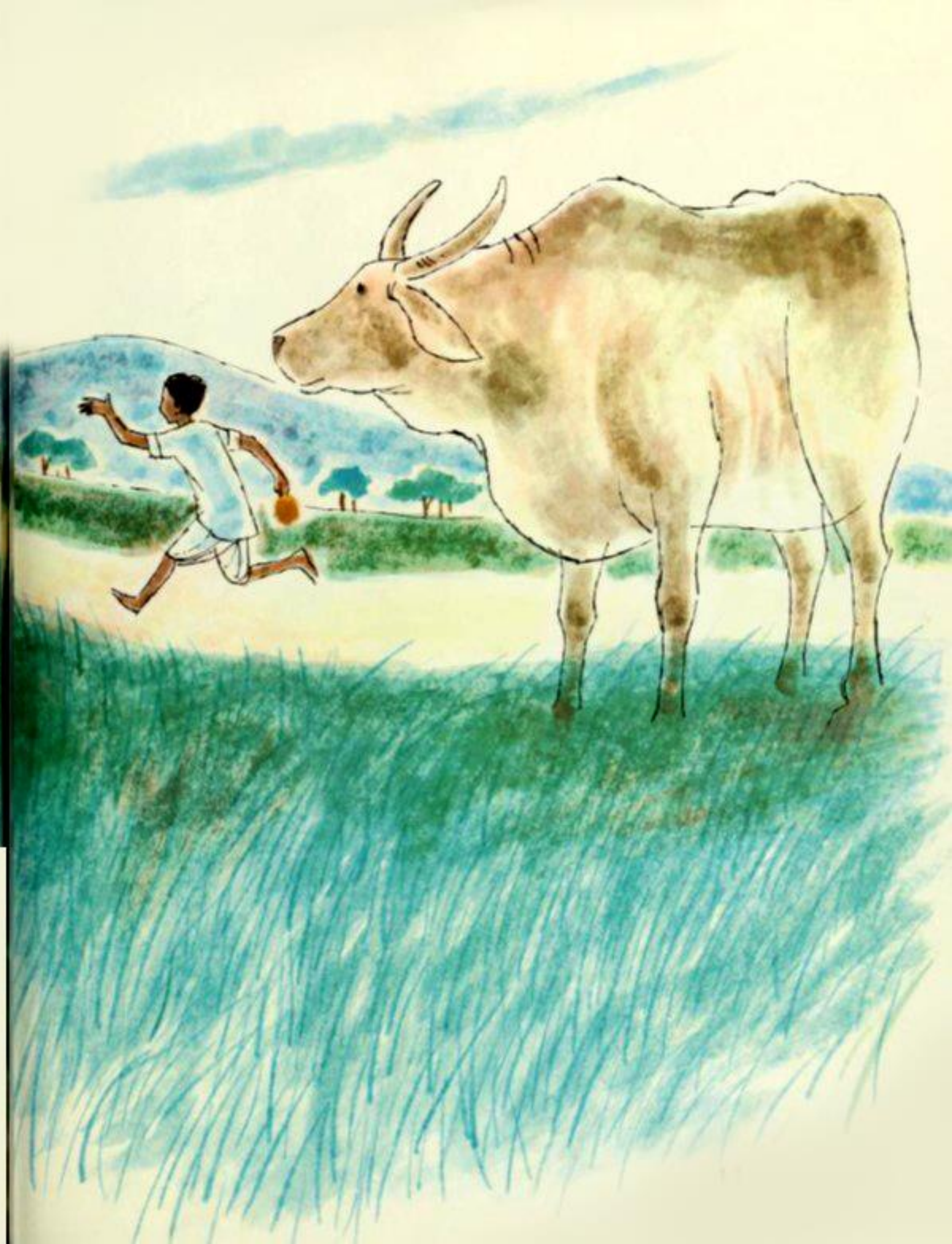

अगले दिन सूर्योदय से पहले ही अरुण उठ गया. हँसी की चीखें उसे बता रही थीं कि बाहर मज़ा शुरू हो चुका था. सड़क बच्चों से भरी थी, प्रत्येक के हाथ में रंगीन गुलाल से भरा मिट्टी का एक बर्तन था.

गुलाल, चाक और रेत का मिश्रण होता है. कुछ बर्तन नीले गुलाल से भरे थे, कुछ लाल से, और कुछ पीले रंग से.

अरुण और मेली भी गुलाल के बर्तन लेकर बाहर भागे. उन्होंने एक-दूसरे पर मुट्ठी भर गुलाल फेंका और चिल्लाए. साको और कवि पहले से ही वहां मौजूद थे.

जब ग्वाला अपनी गायों को सड़कों पर ले जा रहा था, तो बच्चों ने उनपर गुलाल फेंका. "बस, बहुत हो गया," ग्वाले ने हँसते हुए बच्चों से विनती की. “देखो, पहले से ही मेरी गायें मुझे नहीं पहचानती हैं."

बच्चों ने कपड़े धोने वाले धोबी पर भी गुलाल फेंका. उन्होंने बाहर चलते हरेक व्यक्ति पर गुलाल डाला.

गुलाल पड़ने के बाद वयस्क हँसकर अपने घर के दरवाज़े की ओर दौड़ते थे. लेकिन किसी को भी गुलाल फेंकने से कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि होली वाले दिन हर कोई अपने सबसे पुराने कपड़े पहनकर ही घर से बाहर निकलता था.

जब सूर्य ठीक सिर पर होता, तो हर कोई इंद्रधनुष के रंगों जैसा दिखता था. फिर लड़के गुलाल धोने के लिए नदी में उतरे. अरुण अपने बाल सुखाकर वापस जा रहा था, तभी उसने किसी के चिल्लाने की आवाज सुनी. वह चलते-चलते तुरंत रुक गया.

वहां सड़क के मध्य में मास्टर कोस्त्रा थे. उनके सबसे अच्छे कपड़ों पर लाल गुलाल के बड़े-बड़े धब्बे पड़े थे. और वहाँ उनके पास मेली खड़ी थी, उसके हाथ में मुट्ठी भर गुलाल था, और वह सिर से पैर तक थर-थर कांप रही है.

"बद्तमीज़!" स्कूल मास्टर ज़ोर से चिल्लाए. "क्या तुम किसी सर्कस में पली-बढ़ी हो? ज़रा मेरी अचकन को देखो - तुमने मेरी सबसे अच्छी अचकन बर्बाद कर दी है! देखो तुमने यह क्या किया है!"

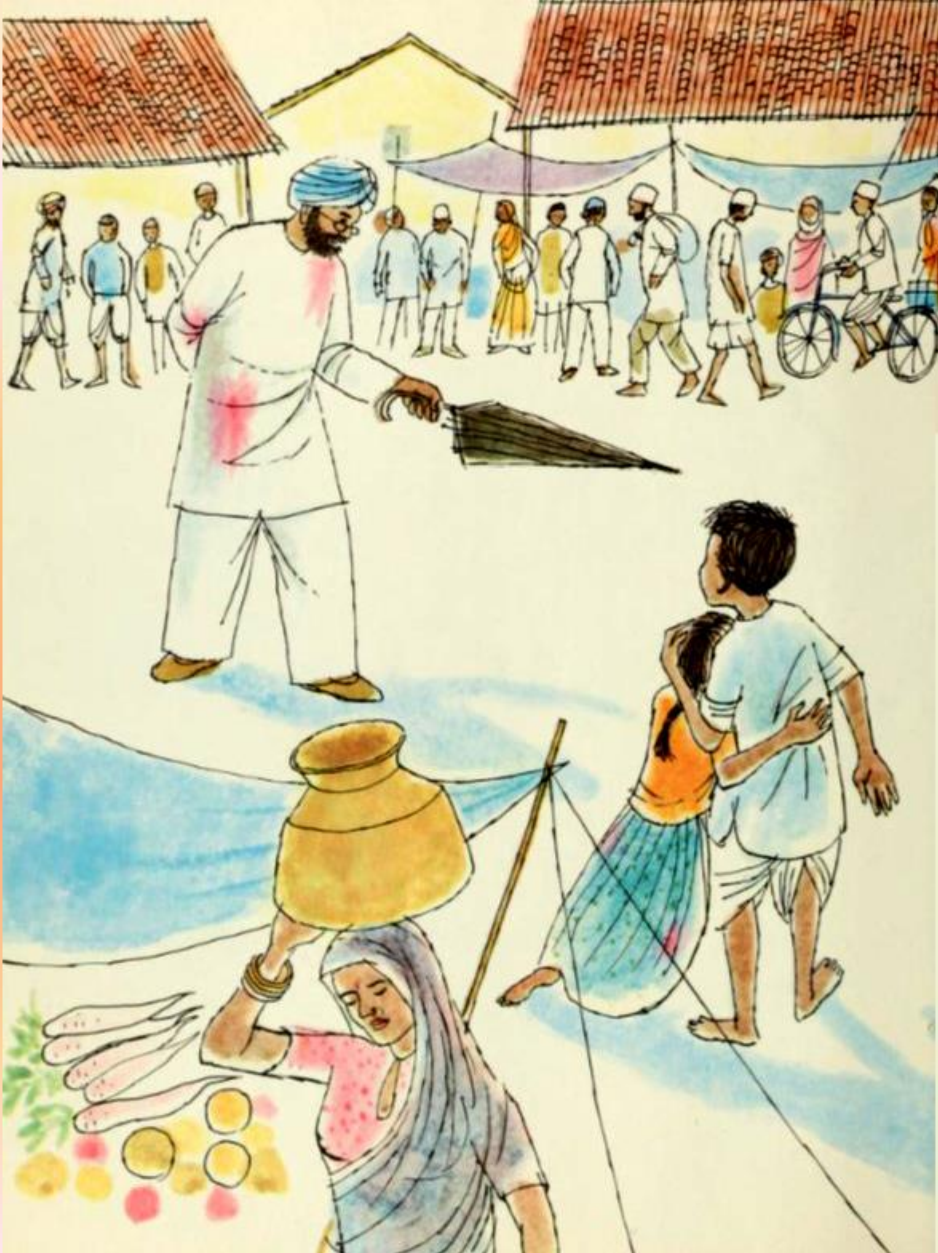

मेली, अरुण के पास दौड़ी हुई गई और उसने अपना चेहरा छिपा लिया. "वह कौन हैं, अरुण?" उसने सिसकते हुए पूछा, "होली के त्योहार वाले दिन वो कौन हैं जो नाराज हो रहे हैं?"

"वही हमारे नए स्कूल मास्टर हैं," अरुण अपनी छोटी बहन को चुप कराते हुए कहा.

अरुण को देखकर स्कूल मास्टर और चिल्लाए. "क्या यह छोटी बंदर तुम्हारी बहन है, अरुण?"

"मास्टर कोस्त्रा, मुझे बहुत खेद है," अरुण ने माफी मांगते हुए कहा. "मेरी छोटी बहन होली मना रही थी. उसे नहीं पता था कि आप इस गाँव में आए हैं. और उसे समझ नहीं आ रहा था कि आज आपने इतने अच्छे कपड़े क्यों पहने हैं."

"कृपया हमारे घर आइए और मैं आपकी अचकन को धोबी के पास ले जाऊंगा. यदि आप हमें अपनी अचकन को साफ करने देंगे तो हमारे लिए वो बड़े सम्मान की बात होगी."

सारा शोर-शराबा सुनकर माताजी और पिताजी भी दौड़कर बाहर आ गए. अरुण ने उन्हें पूरी बात बताई. "मास्टर कोस्त्रा भूल गए थे कि उस दिन होली का त्यौहार था. उन्होंने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने थे और अपनी मेली ने उन पर गुलाल फेंक दिया."

पिताजी ने मास्टर कोस्त्रा को एक कुर्सी पर बैठाया और माताजी मेली को पानी के टब में साफ़ करने के लिए ले गईं.

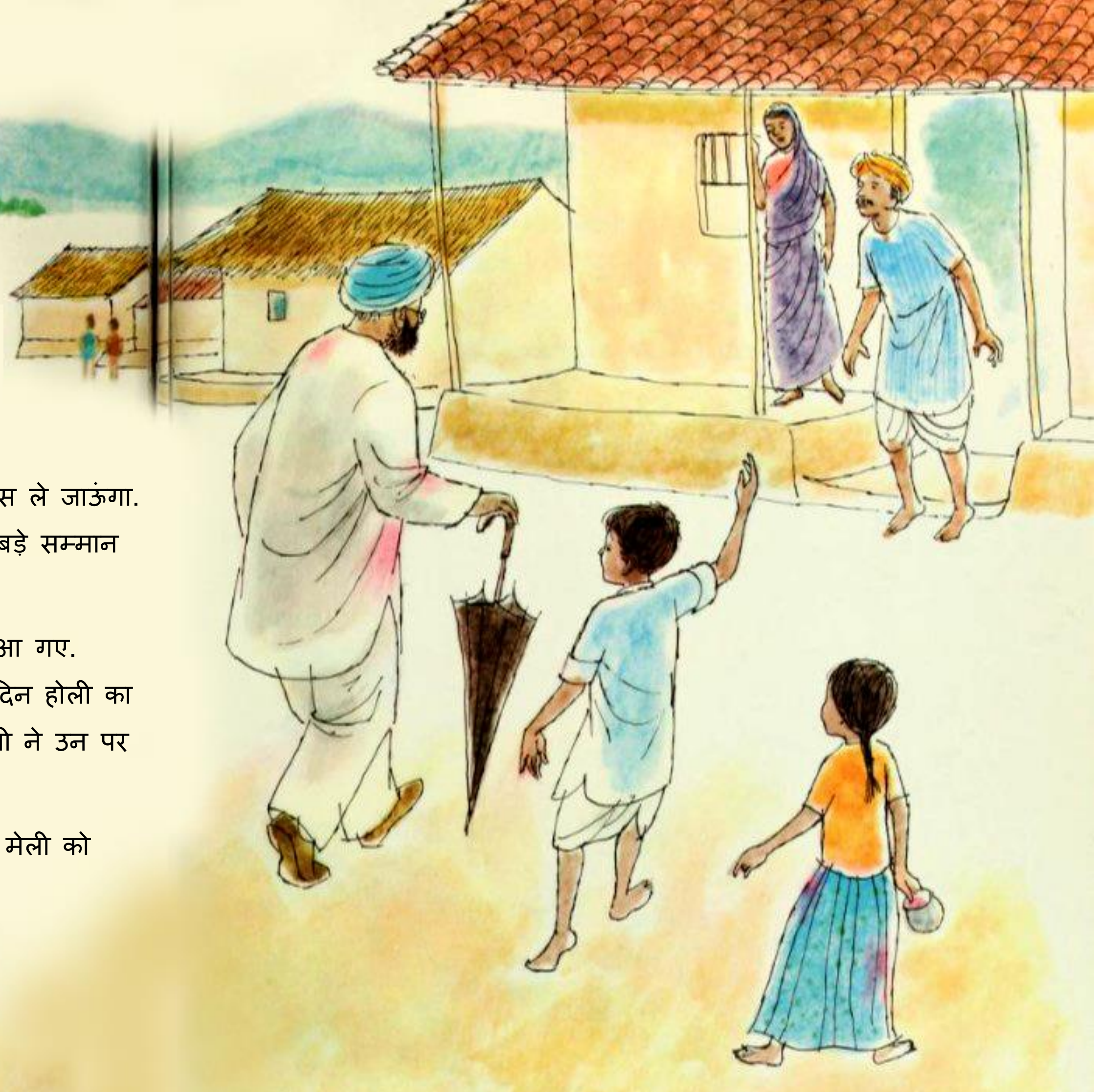

साफ-सुथरे छोटे से घर के अंदर, फर्श पर पुआल की चटाई पर बैठकर मास्टर कोस्त्रा उतने उग्र नहीं लग रहे थे. उन्होंने अपना अचकन उतारी और उसे अरुण को दे दी जो उसे लेकर नदी की ओर दौड़ा.

"क्या बात है अरुण?" साको और कवि ने पूछा, जो धूप में खुद को सुखा रहे थे.

"यह स्कूल मास्टर की अचकन है!" अरुण ने कहा, "मेली ने उस पर गुलाल फेंका, और मास्टर साहिब अभी भी हमारे घर पर ही हैं. मैं उसकी अचकन को धुलवाने के लिए धोबी की तलाश कर रहा हूं."

रवि और साको ने कहा कि धोबी को ढूंढने में वे अरुण की मदद करेंगे.

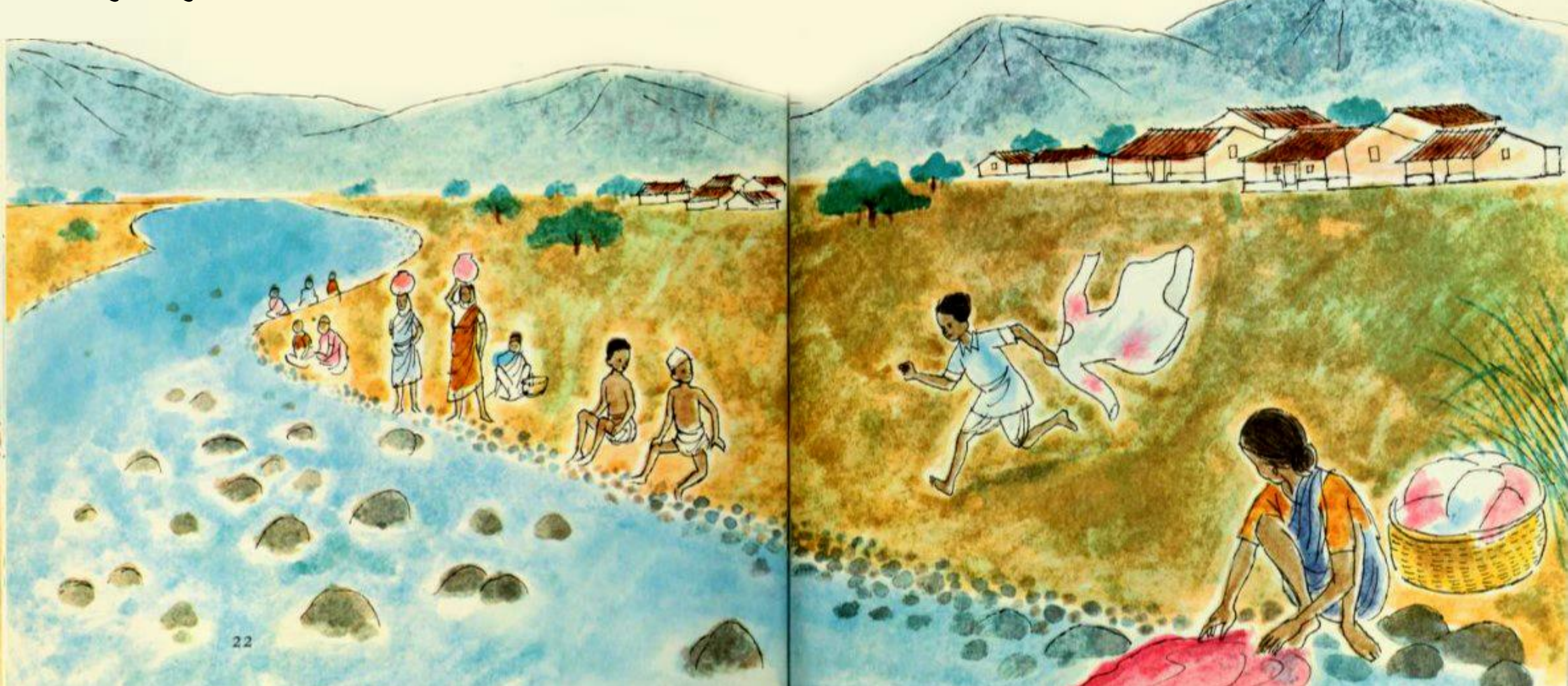

थोड़ी देर बाद जब उन्हें धोबी मिला तो फिर अचकन को धोकर धूप में सुखाया गया. अरुण ने धोबी को पैसे दिए. और फिर तीनों लड़के घर वापस गए.

घर पहुँचने पर उन्होंने बरामदे में से छिपकर खिड़की से अंदर झाँका.

"अहा!" अंदर से आवाज आई. "अरुण, क्या तुम आ गए?"

फिर पर्दा एक तरफ हटा, और वहां पर मास्टर कोस्त्रा, पिताजी के कपड़े पहने खड़े थे और अपने चश्मे के ऊपर से उन्हें देख रहे थे. "तो कवि और साको भी तुम्हारे साथ आये हैं. अच्छा, ज़रा मुझे अपनी अचकन तो देखने दो!"

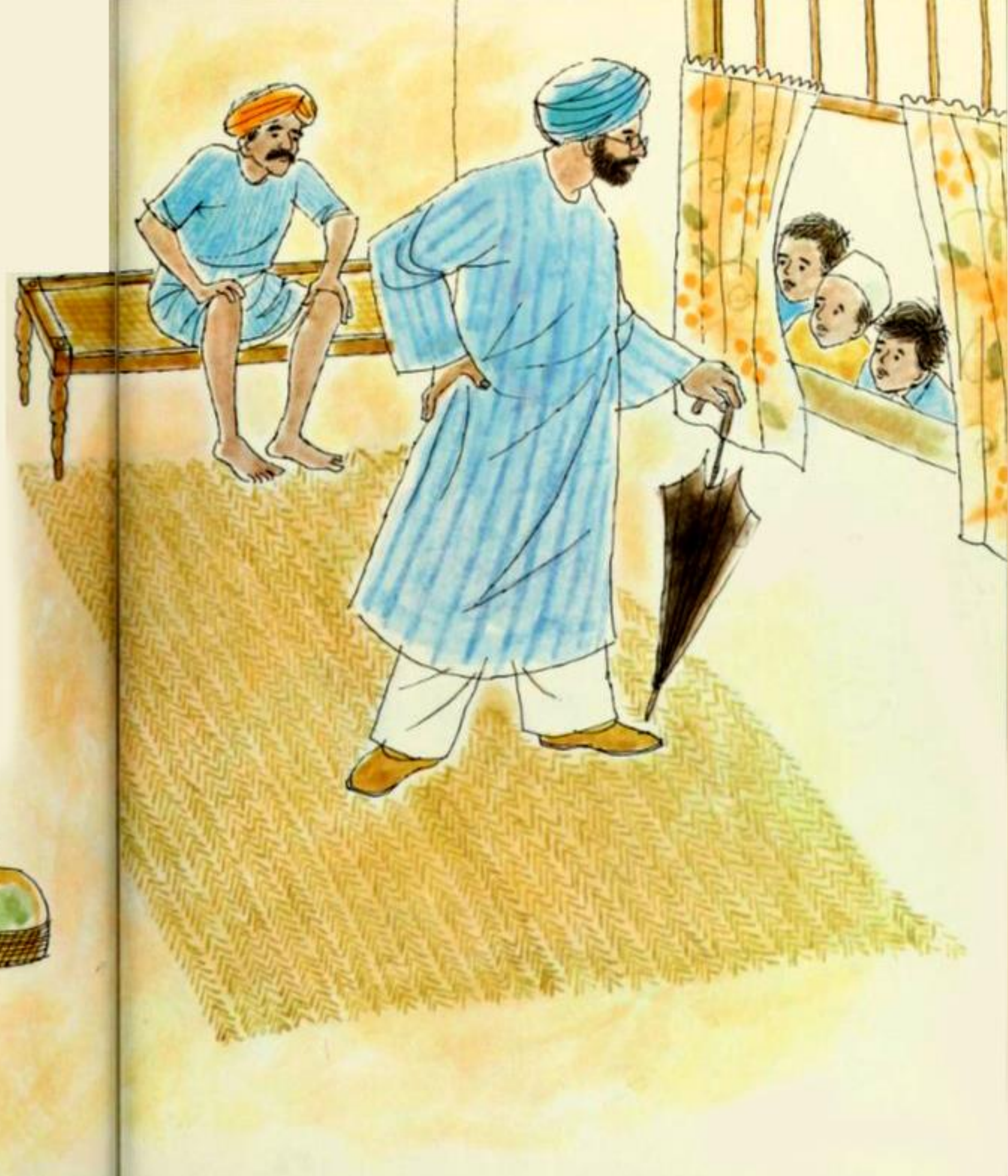

स्कूल मास्टर बरामदे में निकले और उन्होंने अपनी अचकन उठाई. "ठीक है, वो तो एकदम साफ हो गई है! मैंने नहीं सोचा था कि धोबी कभी भी सारा गुलाल साफ़ कर पाएगा."

मां ने मेज पर भरवां गोभी और पापड़, चावल-दाल, रोटी आदि रखते हुए कहा, "हमें बड़ी ख़ुशी होगी मास्टर कोस्त्रा अगर आप दोपहर के भोजन के लिए रुकेंगे." मां ने आगे कहा, "साको और रवि भी रुक सकते हैं. यह वसंत उत्सव है और हमारे गांव के नए स्कूल मास्टर का स्वागत करने का इससे बेहतर और कोई समय नहीं हो सकता है."

"हमें उम्मीद है कि आपको मल्लिकपुर में पढ़ाना पसंद आएगा," पिताजी ने कहा. "हमारे यहाँ बंबई जैसी स्कूली इमारतें तो नहीं हैं, लेकिन हमारे दिल प्रेम से भरे हैं. हमें आपके साथ अपना खाना साझा करने में बेहद खुशी हो रही है."

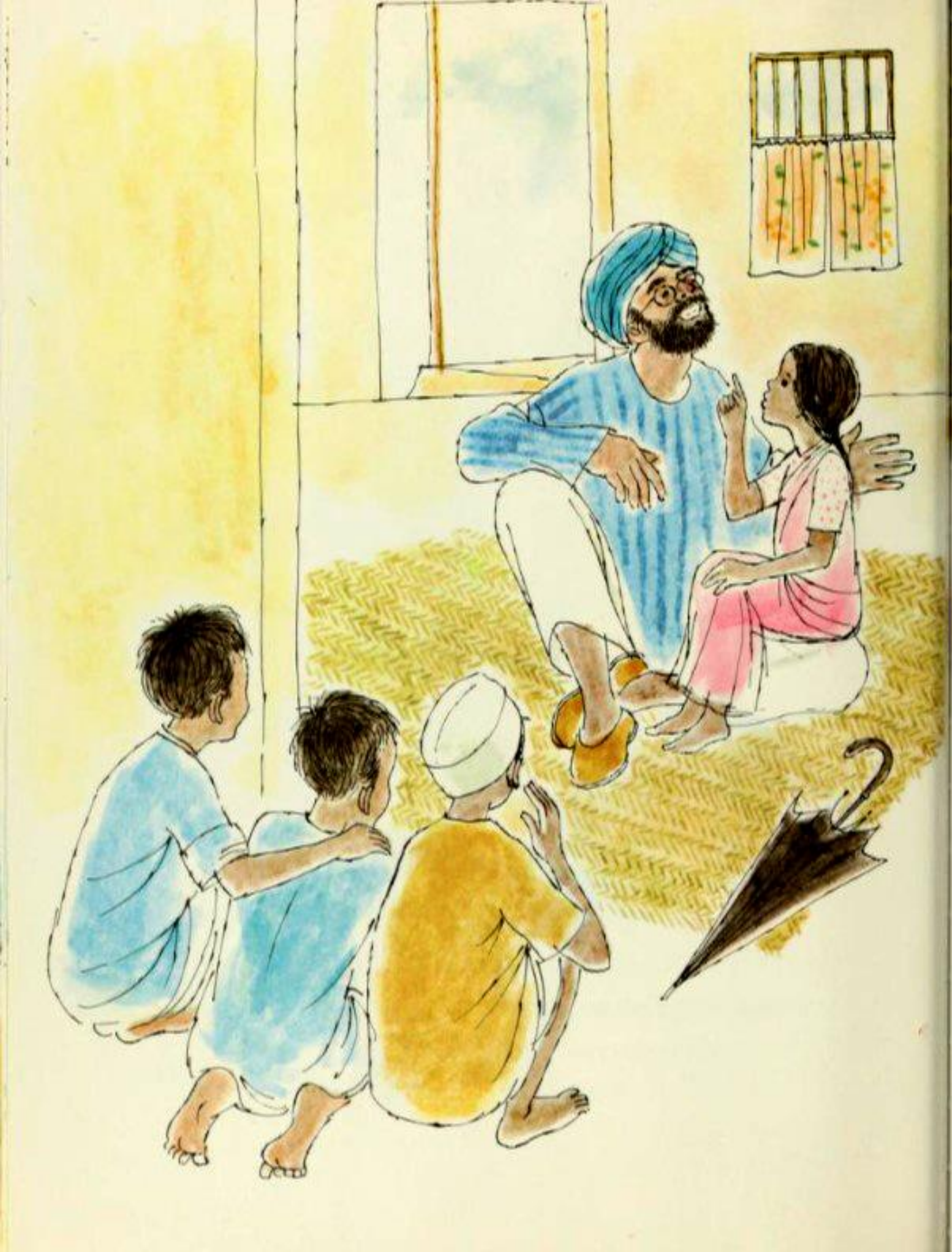

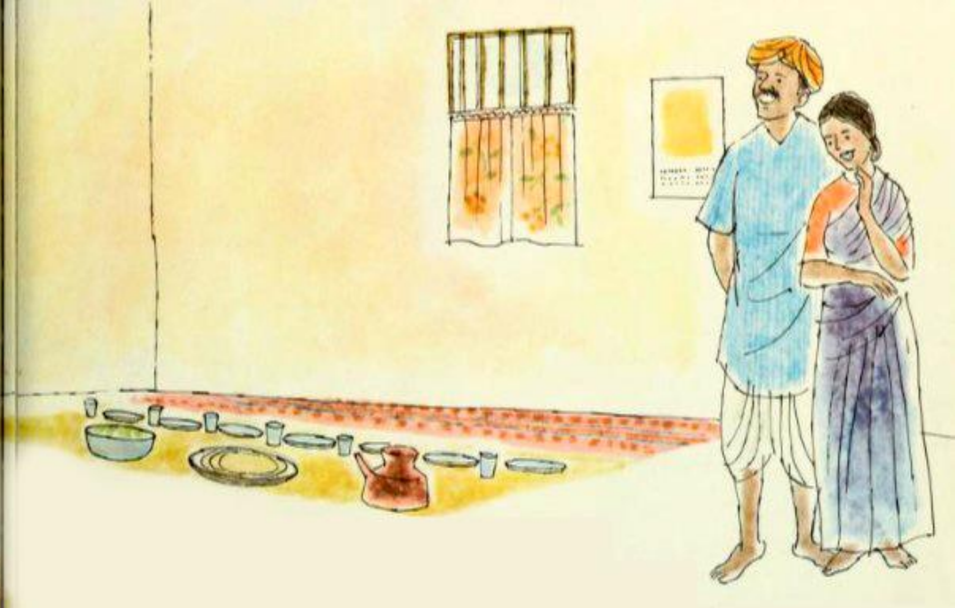

मास्टर कोस्त्रा ने विनम्रता से सिर हिलाया. "ठीक, यह गाँव बम्बई जैसा नहीं है, लेकिन बम्बई में मुझे कभी भी अपने विद्यार्थियों के साथ दोपहर का भोजन करने के लिए कभी भी नहीं निमंत्रण मिला," टीचर ने मुस्कुरा कर कहा. "और वहां पर मुझे कभी भी किसी ने लाल गुलाल से नहीं रंगा."

मेली, जिसका चेहरा रगड़ने के बाद अब चमक रहा था, दरवाज़े के पास से झाँक रही थी और टीचर को घूर रही थी.

"आपकी नाक पर अभी भी लाल गुलाल लगा है," वह टीचर को देखकर हंसी.

मास्टर कोस्त्रा ने अपना सिर पीछे घुमाया और इस बार वो भी हंसे. फिर उन्होंने मेली को अपने घुटने पर बिठाया और कहा, "जब तुमने मेरे कपड़ों पर गुलाल फेंका, छोटी बच्ची, तब मुझे तुम पर बहुत गुस्सा आया था. लेकिन अब जब मुझे पता चला कि तुम लोग अपने गांव में मेरा स्वागत करना चाहते थे, तो मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं."

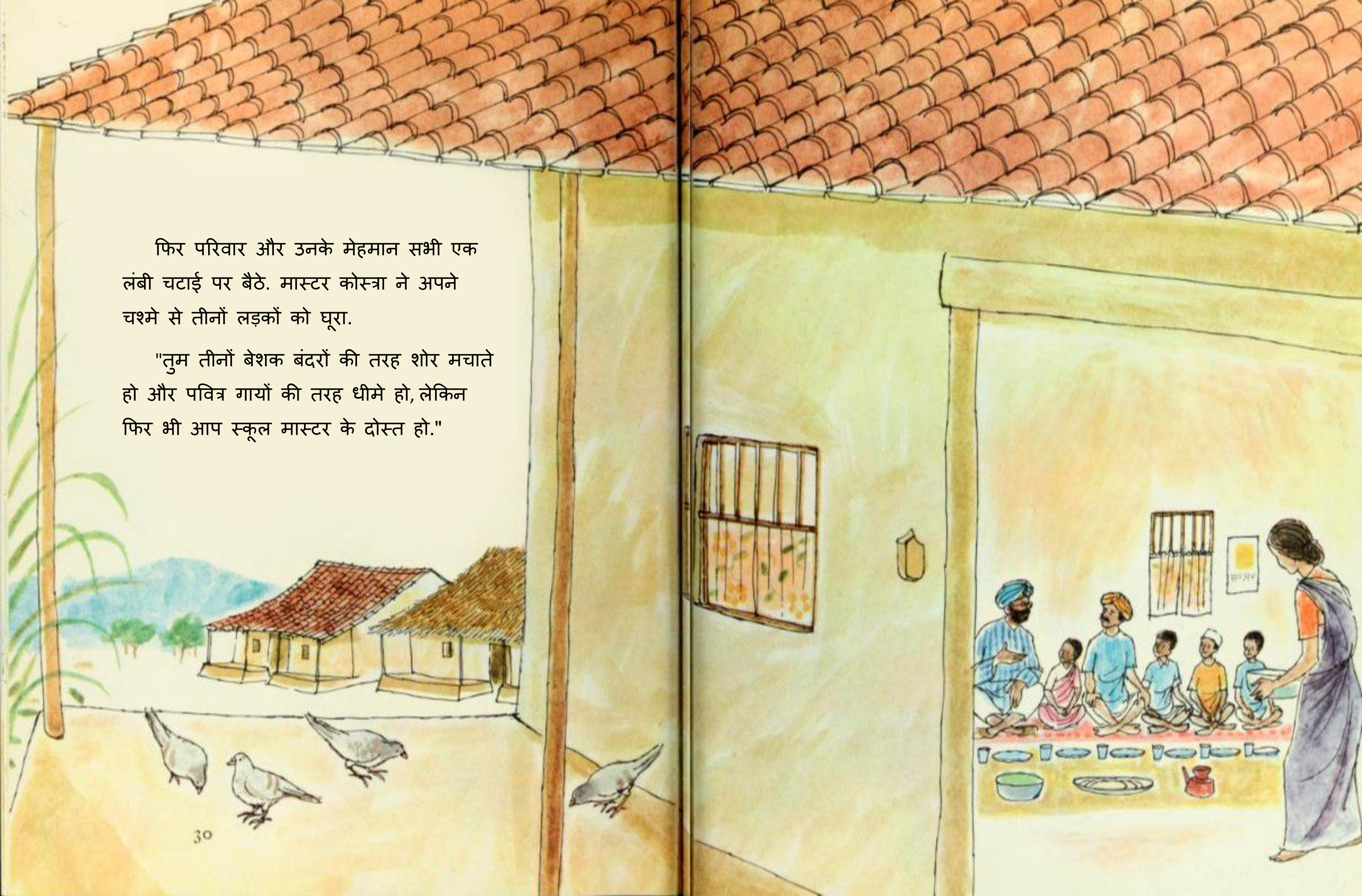

फिर परिवार और उनके मेहमान सभी एक लंबी चटाई पर बैठे. मास्टर कोस्त्रा ने अपने चश्मे से तीनों लड़कों को घूरा.

"तुम तीनों बेशक बंदरों की तरह शोर मचाते हो और पवित्र गायों की तरह धीमे हो, लेकिन फिर भी आप स्कूल मास्टर के दोस्त हो."